

डॉ. डेविड डिसिल्वा , नए नियम की सांस्कृतिक दुनिया , सत्र 2, पठन 1 पतरस सम्मान और शर्म से परिचित

© डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड डिसिल्वा द्वारा न्यू टेस्टामेंट की सांस्कृतिक दुनिया पर दिए गए अपने व्याख्यान में है। यह सत्र 2 है, रीडिंग 1 पीटर सम्मान और शर्म से परिचित है। सम्मान और शर्म

के सांस्कृतिक संदर्भ और मूल्यों पर ध्यान देना न्यू टेस्टामेंट की पुस्तक को पढ़ने का एक बहुत ही उपयोगी तरीका हो सकता है, एक ऐसा पाठ जो उस सांस्कृतिक दुनिया से उभरता है और उस सांस्कृतिक दुनिया द्वारा आकार दिए गए स्थितियों को संबोधित करता है।

विशेष रूप से 1 पतरस के संबंध में, ऐसा प्रतीत होता है कि संबोधित व्यक्ति का शर्मिंदा होने का अनुभव ही पाठ के लेखन के लिए एक प्राथमिक प्रेरक है। 1 पतरस में इस बात के प्रमाण हैं कि यह प्राथमिक चुनौती है जिसे पतरस संबोधित कर रहा है। उदाहरण के लिए, हम पढ़ते हैं, अन्यजातियों के बीच सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत करते रहो ताकि यद्यपि वे तुम्हें अपराधी के रूप में बदनाम करते हैं, फिर भी वे तुम्हारे सम्मानजनक कामों को देखकर परमेश्वर की महिमा करें और परमेश्वर के दर्शन के दिन उसकी महिमा करें।

ध्यान दें कि चर्च से बाहर के लोगों द्वारा इन आरंभिक मसीहियों की ओर से बदनामी के अनुभव का उल्लेख प्रमुखता से किया गया है। फिर, थोड़ी देर बाद, यह एक उपहार है, यदि कोई व्यक्ति ईश्वर के प्रति अपने ध्यान के लिए, अन्यायपूर्ण रूप से कष्ट सहता है। किसी तरह से पीड़ित या दुर्व्यवहार किए जाने का उल्लेख है, विशेष रूप से ईश्वर के प्रति लगाव के कारण जैसा कि ईसाई मण्डली में समझा और अभ्यास किया जाता है।

अध्याय 3 में, यदि आपको न्याय के कारण कष्ट भी उठाना पड़े, तो भी आप विशेषाधिकार प्राप्त हैं। अपना विवेक शुद्ध रखें ताकि जब आप बदनाम हों, तो जो लोग मसीह में आपके अच्छे आचरण का दुरुपयोग करते रहते हैं, वे स्वयं शर्मिंदा हो जाएँ। चौथे अध्याय में, इस संबंध में और भी अधिक प्रमाण यह है कि वे, अर्थात् आपके पड़ोसी, इसलिए दूर हो जाते हैं क्योंकि आप अब उनके साथ अपमानजनक व्यवहार की उसी बाढ़ में नहीं भागते, और इसलिए वे बदनामी करते हैं।

उसी अध्याय में आगे, प्रिय, आप के बीच जो अग्नि परीक्षा चल रही है, उससे निराश न हों। इसके बजाय, इस हद तक आनन्दित हों कि आप मसीह के दुखों में भागीदार हैं। यदि आप मसीह के नाम पर निन्दा किए जाते हैं, तो आप विशेषाधिकार प्राप्त हैं।

यदि आप में से कोई भी मसीही होने के नाते कष्ट उठाता है, तो शर्मिंदा न हो, बल्कि परमेश्वर को सम्मान दे क्योंकि आप इस नाम को धारण करते हैं। 1 पतरस के पूरे पाठ में इन अंशों से, हम देखते हैं कि लेखक मसीहियों के एक समूह को संबोधित कर रहा है, जिन्हें अपमानित, बदनाम, अपमानित किया जा रहा है, कम से कम गैर-मसीही स्वामियों के घरों में ईसाई दासों के मामले

में, ईसाई सुसमाचार और उसके अभ्यास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के कारण पीटा जा रहा है या अन्यथा शारीरिक रूप से अपमानित किया जा रहा है। बदनामी, निंदा, कुछ मामलों में, बाहरी लोगों की ओर से शारीरिक दुर्व्यवहार को क्या प्रेरित कर रहा है? ईसाई के पड़ोसियों का लक्ष्य विचलित विश्वासों के आधार पर विचलित व्यवहार को ठीक करने के लिए विचलन नियंत्रण तकनीकों का उपयोग करने के लिए शर्म का उपयोग करना होगा।

यहाँ शर्मसार करना एक तरह का सामाजिक नियंत्रण है। ईसाई के गैर-ईसाई पड़ोसी धर्मांतरित लोगों, उनके बीच ईसाई धर्मांतरित लोगों के प्रति इस तरह से प्रतिक्रिया क्यों करेंगे? गैर-ईसाइयों के दृष्टिकोण से, उनके बीच पनप रहे ईसाई आंदोलन के खिलाफ कुछ काफी हद तक जायज शिकायतें दर्ज की जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, ईसाई आशा रोमन शांति के उलट होने पर निर्भर करती है।

ईसाई एक उद्धारकर्ता, एक मसीहा, वास्तव में एक राजा की तलाश में थे जो पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करने के लिए आएगा। इस प्रकार, वर्तमान विश्व व्यवस्था, जिसके स्थायित्व पर अधिकांश लोगों ने सोचा था कि उनका कल्याण निर्भर है, ईसाइयों की आशा की पूर्ति के लिए रास्ता बनाने के लिए रास्ते में थी और इसे हटाने की आवश्यकता थी। इसलिए, वे रोमन शांति, रोमन दुनिया के समर्थक नहीं थे।

इसके अलावा, इन गैर-ईसाइयों ने, जब धर्मांतरित लोगों की गतिविधियों को देखा, तो उन्होंने देखा कि अच्छे ईश्वर-भक्त लोग अब उन देवताओं को सम्मान देना बंद कर रहे हैं, जिन पर बहुसंख्यक लोग निर्भर थे, जिनके अनुग्रह और उपहारों पर उनका हक था। इसलिए, जैसे-जैसे किसी दिए गए स्थान पर चर्च का विकास हुआ, गैर-ईसाइयों ने देखा कि उनके बीच उनके देवताओं का अपमान बढ़ रहा था। उन्होंने यह भी देखा कि ईसाइयों ने लगभग हर नागरिक सभा, सामाजिक सभा, या यहाँ तक कि निजी सामाजिक कार्यक्रम या रात्रिभोज से अपनी उपस्थिति वापस ले ली।

इस प्रकार, जो लोग ईसाई आंदोलन में शामिल हो गए, उन्हें अत्यधिक असामाजिक तरीके से कार्य करना शुरू कर दिया। यह, निश्चित रूप से, ईसाइयों द्वारा मूर्तिपूजा से बचने से जुड़ा हुआ है, क्योंकि, फिर से, लगभग हर नागरिक उत्सव या त्यौहार किसी न किसी मूर्तिपूजा अनुष्ठान के इर्द-गिर्द होता था। यहाँ तक कि निजी डिनर पार्टी में भी, जैसा कि धर्मनिष्ठ ईसाई कहते हैं, अनुग्रह शामिल होता था, जिसमें देवताओं का सम्मान करने या देवताओं को धन्यवाद देने का कोई कार्य शामिल होता था, शायद बलिदान के रूप में, जमीन पर शराब डालना, या उस घर में गृहस्वामी के घरेलू मंदिर में धूप चढ़ाना, जहाँ पार्टी आयोजित की जा रही थी।

इसलिए, व्यवहार में ये परिवर्तन, निष्ठा में ये परिवर्तन, और आशा में ये परिवर्तन ईसाई धर्मांतरित लोगों के गैर-ईसाई पड़ोसियों को, शायद काफी हद तक समझ में आने वाली बात है, अपने पूर्व सहकर्मियों, मित्रों और सहयोगियों के नए व्यवहार पर आश्चर्यचकित होने के लिए, यहाँ तक कि अलग-थलग या अलग-थलग होने के लिए, जिस तरह से मैं प्रथम पतरस 4:4 में क्रिया का इलाज करूँगा। न केवल वे आश्चर्यचकित हैं, बल्कि वास्तव में, वे अलग-थलग हैं। ग्रीक शब्द केसेनिज़डोंताई उन्हें आपके नए व्यवहार के लिए बाहरी लोगों की तरह महसूस कराया जाता है,

जो उन्हें बाहर करता है, जो पहले आपके साथ शामिल हुआ करते थे। इस स्थिति में ईसाइयों के पास कई विकल्प थे।

वे अपने पड़ोसियों द्वारा उन पर थोपे जा रहे शर्म के सामाजिक दबाव के आगे झुक सकते हैं। वे उन प्रथाओं को फिर से अपना सकते हैं जो उनके पड़ोसियों ने उनसे अपेक्षित की हैं ताकि वे उन्हें बड़ी व्यवस्था के सार्थक और सहायक सदस्य के रूप में मान सकें। या वे ऐसे पुनर्वास के खिलाफ़ चुनाव कर सकते हैं।

वे अपने शर्मिंदगी के अनुभव से निपटने के तरीके खोज सकते थे ताकि शर्मिंदगी के ये अनुभव उन्हें कमज़ोर न करें और मसीह में उनके नए जीवन की आग को न बुझाएँ। पहला पतरस इन मसीहियों को दूसरा विकल्प चुनने में मदद करने के लिए लिखा गया है, शर्मिंदगी के सामाजिक दबाव के आगे न झुकने के लिए, बल्कि शर्मिंदगी के अनुभव से निपटने के तरीके खोजने के लिए, भले ही वे बहुत संवेदनशील थे। वे सम्मान के प्रति संवेदनशील लोग थे।

वे उन अनुभवों के नकारात्मक प्रभाव के प्रति बहुत संवेदनशील थे। अब, लेखक शर्म को दूर करने और उसके प्रभावों को बेअसर करने के लिए कई रणनीतियों का उपयोग करता है। सबसे पहले, वह अपने दर्शकों को उनके पड़ोसियों द्वारा उन्हें शर्मिंदगी करने के प्रयासों से बचाता है, यह समझाकर कि बाहरी लोगों का निर्णय मौलिक रूप से दोषपूर्ण है और धर्मांतरित व्यक्ति के वास्तविक मूल्य का विश्वसनीय संकेतक नहीं है।

दूसरा, वह शर्मिंदगी और अस्वीकृति के उन अनुभवों की पुनर्व्याख्या करके उन्हें और भी अधिक सुरक्षित करता है, ताकि निरंतर प्रतिरोध और सहनशीलता उनकी स्थिति के प्रति नेक प्रतिक्रिया के रूप में उभरे। लेखक ईसाइयों के रूप में उनके सम्मान के आधार के बारे में विस्तार से बात करके, ईश्वर की दृष्टि में समूह के वास्तविक सम्मान की पुष्टि करके, साथ ही साथ उनका ध्यान अन्य लोगों की ओर आकर्षित करके उनकी पहचान निर्माण में बहुत सकारात्मक योगदान देता है, जो मसीह के प्रति अपनी निष्ठा, ईश्वर के आह्वान के प्रति उनकी आज्ञाकारिता के आधार पर उनके सम्मान को उसी तरह से प्रतिबिम्बित करेंगे। इसलिए, 1 पतरस की बयानबाजी की रणनीति, पादरी की रणनीति के रूप में, हम पहले इस बात पर विचार कर सकते हैं कि लेखक गैर-ईसाइयों को प्रतिष्ठा के न्यायालय से कैसे हटाता है, जो मायने रखता है, ताकि ईसाइयों द्वारा अनुभव की जा रही शर्म को सहना आसान हो जाए, ईसाइयों के अपने सम्मान की भावना के लिए कम सार्थक हो जाए।

1 पतरस के लेखक ने श्रोताओं को याद दिलाया कि उन्होंने अपने पुराने जीवन-शैली से खुद को अलग करने का सचेत निर्णय लिया था, जो उनके आस-पास के लोगों की जीवन-शैली बनी हुई है। धर्मांतरित लोगों ने अपने साथी गैर-यहूदियों की पसंद के अनुसार काम करने से इनकार कर दिया था क्योंकि वे जिस जीवन-शैली के लिए बुलाए जा रहे थे, उसे अधिक सम्मानजनक मानते थे, जो परमेश्वर चाहता है, न कि जिसे परमेश्वर मूल्यहीन या घृणित मानकर अस्वीकार करता है। ईसाई धर्म में उनका धर्मांतरण अपने आप में उनके पड़ोसियों पर एक निर्णय था और इस प्रकार, उनके पड़ोसियों की इस बात को पहचानने की क्षमता पर एक निर्णय था कि क्या सम्मानजनक है और क्या सम्मानजनक नहीं है।

धर्मातरित व्यक्ति के पड़ोसी खुद भी बेईमानी से रहते थे। लेखक श्रोताओं को इस तथ्य की याद दिलाता रहता है। अध्याय 4, श्लोक 3 में, वह गैर-ईसाई पड़ोसियों के बारे में बात करता है जो अभी भी अशुद्ध कार्यों, अशुद्ध इच्छाओं, नशे में धुत लोगों, दावतों, मौज-मस्ती और अनुचित मूर्तिपूजा में लिप्त हैं।

वह उनके जीवन को एक तरह से पतित जीवन की बाढ़ के रूप में बताता है। वह समझाता है कि पड़ोसियों की शत्रुता और धर्मातरित लोगों को शर्मिंदा करने की उनकी इच्छा उनके पड़ोसियों की ईसाई धर्मातरित लोगों से अलग-थलग होने की भावना से आती है, जिन्होंने वास्तव में अपने पड़ोसियों के पापपूर्ण व्यवहार से खुद को अलग करके अच्छा किया है। गैर-ईसाई पड़ोसी जो ईसाई धर्मातरित लोगों का अपमान कर रहे हैं, वे वचन के प्रति अपनी अवज्ञा के कारण पतन की ओर अग्रसर हैं, कि धर्मातरित लोगों ने जो भी वचन माना है और इसलिए, वह उनके लिए सम्मान की ओर ले जाएगा।

और इसलिए, लेखक ने पूरे पत्र में बाहरी लोगों, गैर-ईसाइयों को ऐसे लोगों के रूप में प्रस्तुत किया है जो ईश्वर की दृष्टि में हैं, अंततः विचलित लोग, जो नियमों से बाहर हैं। इसलिए, इन विचलित लोगों, गैर-ईसाइयों द्वारा ईसाइयों पर थोपी गई किसी भी शर्मिंदगी को गंभीरता से नहीं लिया जाना चाहिए। यह गैर-ईसाइयों के ईश्वर और ईश्वर के सत्य से अलगाव से आता है और यदि वे इसके आगे झुक जाते हैं तो यह केवल ईसाइयों को गुमराह कर सकता है।

धर्मातरित व्यक्ति की पूर्व जीवनशैली, जो गैर-ईसाई पड़ोसी की जीवनशैली बनी हुई है, को अंधकार के रूप में बताया गया है, जो प्राचीन दुनिया में एक मानक छवि है, लेकिन आधुनिक दुनिया में भी बनी हुई है, अज्ञानता की छवि, ज्ञान की कमी, सभी तथ्यों का न होना ताकि कोई व्यक्ति सत्य के बारे में विश्वसनीय राय बना सके। लेखक पूर्वजों से विरासत में मिली जीवन की खोखली जीवनशैली के बारे में बात करता है। यह धर्मातरित लोगों को न केवल उनके अपने अतीत और उनके ईसाई-पूर्व अतीत की मूल्यहीनता की याद दिलाता है, बल्कि उनके पड़ोसियों के जीवन जीने के तरीके की भी याद दिलाता है।

यह एक ऐसा जीवन है जो किसी व्यक्ति की भावनाओं और इच्छाओं के अनुरूप है, जो वास्तव में मूल्यवान, वांछनीय या अच्छा क्या है, इसके विश्वसनीय ज्ञान के आधार पर नहीं बल्कि अज्ञानता में जगाया गया है। गैर-ईसाई पड़ोसी, फिर से ईसाइयों को कम सम्मानजनक, अधिक सीमित जीवन शैली में वापस लाने का प्रयास कर रहे हैं। इसलिए, उनकी निंदा केवल बदनामी है, जैसा कि लेखक कहते हैं, निराधार नकारात्मक भाषण।

यह मूर्ख लोगों की अज्ञानता है कि ईसाई धर्म में परिवर्तित लोगों के जीवन की महानता अंततः ऐसी ही दिखाई देगी। लेखक यह भी सुझाव देता है कि वास्तव में ईसाई ही नहीं हैं जो इस शर्मनाक और अपमानजनक स्थिति में परीक्षण के दौर से गुजर रहे हैं। वास्तव में गैर-ईसाई ही परीक्षण के दौर से गुजर रहे हैं और नकारात्मक रूप से साबित हो रहे हैं।

इस रणनीति के लिए, मैं सबसे पहले हमें स्टोइक दार्शनिक एपिक्टेटस के पास ले जाऊंगा, जो 80 से 100 ईस्वी के आसपास फला-फूला। तो, सक्रिय न्यू टेस्टामेंट अवधि के बाद, लेकिन फिर भी

बहुत मददगार। एपिक्टेटस लिखते हैं, अगर आप पर अधिकार रखने वाला व्यक्ति कहता है, मैं आपको अपवित्र और अपवित्र मानता हूँ, तो वास्तव में आपके साथ क्या हुआ है? आपको अपवित्र और अपवित्र घोषित किया गया है और इससे ज़्यादा कुछ नहीं।

यदि व्यक्ति ने किसी न्याय-वाक्य पर निर्णय पारित किया था और घोषित किया था कि मैं कथन का न्याय करता हूँ, यदि दिन है, प्रकाश है, तो यह झूठा है, न्याय-वाक्य का क्या हुआ? इस मामले में किसका न्याय किया जा रहा है? किसकी निंदा की गई है? न्याय-वाक्य या वह व्यक्ति जिसने इसके बारे में गलत निर्णय लिया है? क्या तब ऋषि को एक अशिक्षित व्यक्ति पर ध्यान देना चाहिए जब वह पवित्र और अपवित्र, न्यायपूर्ण और अन्यायपूर्ण के बारे में निर्णय देता है? 1 पतरस के लेखक ने अपने पत्र के दूसरे अध्याय में एपिक्टेटस के समान ही तर्क दिया है। न्याय-वाक्य के बजाय, न्याय किए जाने के बजाय, हमारे पास जो है वह यीशु का न्याय किया जाना है। क्या यीशु को एक अनमोल, सम्मानित आधारशिला माना जाता है, या यीशु को एक अस्वीकृत पत्थर के रूप में माना जाता है, जिसे मनुष्यों द्वारा अस्वीकार किया जाना चाहिए? सेप्टुआजेंट के यूनानी अनुवाद में भजन 118, 117 से पुराने नियम के शास्त्रों की भाषा का उपयोग करते हुए, पतरस यीशु के बारे में जीवित पत्थर के रूप में बात करता है, जिसे मनुष्यों द्वारा बेकार मानकर अस्वीकार कर दिया गया, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में वह पसंदीदा और बहुमूल्य है।

जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने अस्वीकार कर दिया था, वह कोने का सिरा बन गया। तो, वास्तव में, यहाँ किसका न्याय किया जा रहा है? पत्थर का? नहीं, बल्कि उन राजमिस्त्रियों का जिन्होंने पत्थर को अस्वीकार कर दिया। उन्हें इस पत्थर के मूल्य के बारे में गलत राय बनाते हुए दिखाया गया है क्योंकि परमेश्वर ने उस पत्थर को कोने का पत्थर होने के लिए चुना था, और राजमिस्त्रियों ने इसे नहीं समझा।

उन्होंने पत्थर को एक फेंके जाने वाले ब्लॉक के रूप में माना जिसे हटाया जाना था। इसलिए, धर्मग्रंथ, भजन पाठ, एक आधिकारिक कथन बन जाता है कि मनुष्य, बिल्डरों या गैर-ईसाई बाहरी लोगों का आकलन, किसी व्यक्ति या वस्तु के मूल्य पर अंतिम शब्द नहीं है। दूसरा पाठ जिसे लेखक ने बुना है, वह यशायाह, अध्याय 28 से है।

देखो, मैंने सिख्योन में एक पत्थर, एक पसंदीदा, कीमती आधारशिला स्थापित की है, और जो व्यक्ति इस पर निर्भर करता है, उसे कभी भी शर्मिंदा नहीं होना पड़ेगा। इस दूसरे पाठ को मिलाकर, लेखक ईश्वर के आकलन को एकमात्र महत्वपूर्ण के रूप में पहचानता है, क्योंकि ईश्वर उस पत्थर को, जिसे बिल्डरों ने अस्वीकार कर दिया था, वास्तव में आधारशिला बना सकता है। लेखक श्रोताओं, अपने दर्शकों को, शर्म की भावनाओं का मुकाबला करने, बाहरी लोगों द्वारा शर्मिंदा होने के लिए, आदर्शों और गुणों के अवतार के आधार पर स्वस्थ आत्म-सम्मान विकसित करने के लिए कहता है, जिन्हें वे जानते हैं कि ईसाई संस्कृति के भीतर और बाहर दोनों जगह सम्मान में रखा जाता है।

इसलिए, उदाहरण के लिए, 1 पतरस में जिस पैराग्राफ के बारे में हम बात कर रहे हैं, उसके तुरंत बाद, लेखक श्रोताओं को जुनून पर काबू पाने, सद्गुणों के लिए अपनी इच्छाओं पर काबू पाने के परिचित नैतिक विषय का उपयोग करते हुए प्रोत्साहित करता है। इसलिए, वह लिखता है, मैं तुम्हें

उन शारीरिक इच्छाओं से दूर रहने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ जो तुम्हारी आत्मा के विरुद्ध युद्ध करती हैं, और अन्यजातियों के बीच अपने आचरण को सम्माननीय बनाए रखो। अब, जुनून पर काबू पाने का यह विषय बहुत आम था, एक स्टोइक नैतिक प्रवचन में और दूसरा अरिस्टोटेलियन नैतिक प्रवचन में।

सद्गुण के मार्ग और इसलिए, सम्मानपूर्वक जीने के तरीके के बारे में सोचना आम बात हो गई है। हमें अपने भीतर की उन लालसाओं, अपने भीतर की उन इच्छाओं पर काबू पाना चाहिए जो हमें बुराई की ओर ले जाती हैं, जो सद्गुण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को कमजोर करती हैं। और इसलिए 1 पतरस के लेखक, यहाँ, इस विषय का उपयोग ईसाइयों को खुद को आश्वस्त करने में मदद करने के लिए कर रहे हैं कि वे वास्तव में, उनके लिए संस्कृति की सर्वोच्च इच्छाओं को पूरा कर रहे हैं, उच्चतम, मुझे कहना चाहिए, उनके लिए संस्कृति के सर्वोच्च आदर्श, भले ही बाहरी लोग इसे पहचान न पाएँ।

एक अन्य संबंधित नस में, गैर-ईसाई स्वामियों के ईसाई दासों को लेखक द्वारा अपने स्वयं के आचरण के संरक्षक के रूप में कार्य करने का अधिकार दिया जाता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे इस तरह से व्यवहार न करें जिससे दंड के लिए अनावश्यक कारण उत्पन्न हों। 220 और उसके बाद के इस अंश में, लेखक गैर-ईसाई स्वामियों को कई तरीकों से अधीनता का आग्रह करता हुआ प्रतीत होता है, लेकिन वह ऐसा इस तरह से नहीं करता है कि प्रतिरोध करने की उनकी शक्ति समाप्त हो जाए, जहाँ ईसाई, क्षमा करें, मैं यह कहता रहता हूँ, जहाँ गैर-ईसाई स्वामी दास को कुछ ऐसा कार्य करने के लिए मजबूर करने का प्रयास कर रहा है जो एक ईश्वर के प्रति उसकी निष्ठा का उल्लंघन करेगा। इस प्रकार, एक दास ईश्वर के समक्ष शुद्ध विवेक बनाए रखने की अपनी प्रतिबद्धता के परिणामस्वरूप किसी प्रकार की अवनति को सहन कर सकता है और कुछ दंड के लिए प्रस्तुत हो सकता है।

और लेखक वास्तव में उस दास से कह रहा है कि जब ऐसा होता है, तो उसके बारे में चिंता मत करो। इसका मतलब यह नहीं है कि तुम बुरे हो। इसका मतलब यह है कि तुम ईश्वर के लिए खड़े हो और इसके लिए अन्यायपूर्ण तरीके से पीड़ित हो रहे हो, और इस तरह ग्रीको-रोमन दुनिया में सबसे कम सशक्त व्यक्ति, दास को इस तरह का व्यवहार करने के लिए सशक्त बना रहे हो, जिसके कारण उसके स्वामी को उसे सज़ा देनी पड़ती है, उन्हें यह आश्वासन देते हुए कि वे फिर भी ईश्वर के पक्ष में बने रहेंगे।

दास को अपने स्वामी का मूल्यांकन करने का अधिकार है। यदि स्वामी ईसाई मूल्यों और प्रथाओं के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के कारण ईसाई दास को अपमानित करने से परहेज करता है, तो वह स्वामी 1 पतरस 2.20 की भाषा का उपयोग करते हुए एक अच्छा और सौम्य व्यक्ति है। लेकिन यदि स्वामी ईसाई मूल्यों और प्रथाओं के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के कारण ईसाई दास को शर्मिंदगी और दर्द देता है, तो वह स्वामी कुटिल और विकृत है। यहाँ, हमारे पास उसी प्रश्न का एक रूप है।

यहाँ किसका न्याय किया जा रहा है? दास का या स्वामी का? लेखक, 1 पतरस, इस मामले में कहता है, यह स्वामी है जिसका न्याय इस आधार पर किया जा रहा है कि क्या वह स्वामी अपने

दासों के बीच अच्छे ईसाई आचरण को दंडित करता है या नहीं। अंत में, उसी तर्ज पर, लेखक अलंकारिक प्रश्न पूछता है, वह व्यक्ति कौन है जो आपको चोट पहुँचाएगा यदि आप अच्छे के लिए उत्साही हैं? हालाँकि, तथ्य यह है कि कुछ गैर-ईसाई कुछ ईसाइयों को चोट पहुँचा रहे हैं जो स्वयं ईश्वर की दृष्टि में अच्छा करने के लिए उत्साही हैं। इसलिए, हम यहाँ पाते हैं कि लेखक गैर-ईसाइयों को पूरी तरह से तर्कहीन तरीके से काम करते हुए प्रस्तुत करता है जो मानव व्यवहार के लिए किसी भी तर्कसंगत अपेक्षा के अनुरूप नहीं हैं क्योंकि वे वास्तव में उन लोगों को दंडित कर रहे हैं जो केवल वही करना चाहते हैं जो ईश्वर की दृष्टि में अच्छा है, अर्थात् ईसाई धर्मातरित।

ऐसे बहुत से लोग हो सकते हैं, बहुत से गैर-ईसाई, जो इस तरह से काम कर रहे हैं, लेकिन इससे वे कम सच्चे पथभ्रष्ट नहीं बन जाते। और इसलिए, लेखक अगले ही श्लोक में आगे कहता है, अगर आपको न्याय के कारण कष्ट भी उठाना पड़े, तो भी आप विशेषाधिकार प्राप्त होंगे। सभी तर्कसंगत अपेक्षाओं के विपरीत, ईसाई धार्मिकता के लिए अपमान और दुर्व्यवहार सह रहे हैं।

यह संकेत नहीं देता कि उनमें कुछ गड़बड़ है, बल्कि यह कि उनके पड़ोसियों में कुछ कमी है जो उनकी जीवनशैली में आए बदलाव के प्रति इस तरह प्रतिक्रिया करते हैं। इस प्रकार, लेखक ने अपने पूरे पादरी पत्र में अपने श्रोताओं को यह निर्धारित करने की स्थिति में रखा कि क्या उन पर शर्म, निंदा या कोई अन्य सामाजिक प्रतिबंध उचित रूप से लगाया जा रहा है या नहीं, और यदि नहीं, तो शर्म के किसी भी आरोपण के दंश, भार, सामाजिक बल की उपेक्षा करें। कोई फिर से तुलना कर सकता है कि 1 पतरस क्या कर रहा है, जो हम ग्रीको-रोमन दार्शनिक ग्रंथों में पाते हैं।

उदाहरण के लिए, सेनेका द्वारा एक लेख, जिसे हमने पहले व्याख्यान में पहली सदी के दार्शनिक और राजनेता के रूप में पढ़ा था, एक ग्रंथ में लिखा गया है जिसका नाम है ऑन द कॉन्स्टेंसी ऑफ द वाइज़ मैन। दोनों स्कूल, स्टोइक और एपिकुरियन का जिक्र करते हुए, दोनों स्कूल आपको चोटों और चोटों की छाया और सुझावों को तिरस्कार करने का आग्रह करते हैं। चोटों और अपमानों को तुच्छ समझने के लिए किसी को बुद्धिमान व्यक्ति होने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि केवल समझदार व्यक्ति होने की आवश्यकता है, जो खुद से कह सके, क्या मैं इन चीजों के लायक हूँ या नहीं? अगर मैं उनके लायक हूँ, तो कोई अपमान नहीं है; यह न्याय है, लेकिन अगर मैं उनके लायक नहीं हूँ, तो जो अन्याय करता है, वह शर्मिंदा होता है।

जैसा कि हमने 1 पतरस में देखा है, लेखक अपने ईसाई श्रोताओं के साथ एक बहुत ही समान रणनीति का उपयोग कर रहा है, उन्हें ये प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित कर रहा है। क्या मैं उस शर्म के लायक हूँ जिसका मैं अनुभव कर रहा हूँ? क्या मैंने परमेश्वर की दृष्टि में कोई वैध गलत काम किया है? अगर ऐसा है, तो मुझे ऐसा करना बंद कर देना चाहिए। अगर नहीं, तो चर्च के बाहर के लोगों को शर्म आनी चाहिए क्योंकि वे सम्माननीय के विपरीत व्यवहार कर रहे हैं।

अब, इस पत्र में, हम पाते हैं कि पतरस शर्म के अनुभवों की इस तरह से पुनर्व्याख्या करता है कि उन्हें न केवल सहना आसान हो जाता है बल्कि शर्म के अनुभव को ही सम्मान पाने के लिए एक स्थान में बदल देता है, जहाँ सम्मान सबसे अधिक मायने रखता है, अर्थात् परमेश्वर की दृष्टि में। एक रणनीति जिसका वह उपयोग करता है वह है संबोधित व्यक्तियों की विभिन्न परीक्षाओं को उनके विश्वास की वास्तविकता और परमेश्वर के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के परीक्षण के आधार के

रूप में बोलना। हम इसे 1 पतरस 1: 6-7 में और फिर बाद में 4:12 में पाते हैं। परमेश्वर धार्मिक या बुद्धिमान व्यक्ति के मूल्य को साबित करने और वास्तविकता, उनके गुणों की वास्तविकता को परखने के लिए कठिनाइयों का उपयोग करता है क्योंकि कोई भी व्यक्ति तब गुणी हो सकता है जब उसे कुछ भी खर्च न करना पड़े।

इसलिए, यह फ्रेमिंग डिवाइस। क्या आप तब भी पुण्यवान रहेंगे जब आपको इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी? यदि ऐसा है, तो मैंने आपके द्वारा सम्माननीय चीजों के प्रति प्रतिबद्धता की वास्तविकता को साबित कर दिया है। उनके पड़ोसियों की निंदा और अस्वीकृति विश्वासियों के लिए अधिक से अधिक प्राप्त करने के अवसर बन जाते हैं, 1 पतरस से उद्धृत करते हुए, जब मसीह स्वयं महिमा में लौटते हैं, तो प्रशंसा और महिमा और सम्मान मिलता है।

यह 1 पतरस 1:7 और 14 है। दूसरा, लेखक समाज के हाशिये पर होने को नई सामान्य बात के रूप में परिभाषित करता है। वह नहीं चाहता कि हाशिये पर होने का अनुभव ईसाई धर्मांतरित लोगों पर यह विचार थोपे कि, अरे, हम गलत जगह पर हैं।

हम उस सामान्य मार्ग से भटक गए हैं जहाँ हमें होना चाहिए था। इसके बजाय, लेखक धर्मांतरित लोगों को उस प्रतिरोध और अस्वीकृति के कारण अलगाव का अनुभव करने से बचाता है जिसका उन्हें सामना करना पड़ा है। वह लिखते हैं, इससे आश्चर्यचकित न हों।

इस अनुभव से निराश न हों। एक बार फिर, विचलित व्यक्ति की तरह व्यवहार किए जाने के अनुभव को सामान्य बनाने में यीशु का उदाहरण बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ईसाई धर्म में परिवर्तित होने वालों के लिए यीशु नया आदर्श है, और यीशु ने खुद अनुभव किया, या मुझे कहना चाहिए, यीशु का पैटर्न खुद अस्वीकृति, तिरस्कार सहने और पीड़ा के माध्यम से सम्मान प्राप्त करने का एक पैटर्न था।

लेखक यहाँ तक लिखता है कि यह परमेश्वर की पूर्वनिर्धारित योजना थी जो भविष्यद्वक्ताओं को पहले से ही बता दी गई थी कि मसीह पीड़ा के बाद आने वाली महिमा में प्रवेश करेगा। इसलिए, यीशु का अनुभव, न केवल शिष्यों के शर्म के अनुभव को सामान्य बनाता है, बल्कि समाज की विचलन नियंत्रण तकनीकों के अधीन होने के अनुभव को भी सामान्य बनाता है, बल्कि इस उम्मीद के लिए एक मिसाल भी प्रदान करता है कि निरंतर धीरज सम्मान की ओर ले जाएगा, ठीक उसी तरह जैसे यीशु ने परमेश्वर द्वारा उचित ठहराए जाने के बाद महिमा में प्रवेश करने के मार्ग पर अंतिम अवनति, अस्वीकृति, बदनामी, अपराधी के रूप में निंदा और सूली पर चढ़ने से गुज़रा, इसलिए ईसाई उम्मीद कर सकते हैं कि क्रूस के रास्ते पर चलने से ईश्वर की दृष्टि में स्थायी सम्मान का भविष्य का अनुभव और औचित्य प्राप्त होगा। इस प्रकार, लेखक लिख सकता है कि जो सही है उसके लिए, जो सही है उसे करने के लिए, यदि परमेश्वर ऐसा चाहता है, तो जो गलत है उसे करने के बजाय पीड़ित होना बेहतर है, विशेष रूप से इसलिए क्योंकि मसीह ने भी पापों के कारण एक बार और सभी के लिए पीड़ा सही, अन्यायी लोगों के लिए न्यायी व्यक्ति।

या, और भी सीधे तौर पर, 1 पतरस 2.20 और उसके बाद, मसीह ने भी आपके लिए दुख उठाया, और आपके लिए एक उदाहरण छोड़ा ताकि आप उसके पदचिन्हों पर चलें। फिर से, अध्याय 4

में, लेखक यीशु के अनुभव को एक व्यक्ति के दुख के अनुभव के रूप में नए आदर्श के रूप में प्रस्तुत करता है। चूँकि यीशु, क्षमा करें, चूँकि मसीह ने तब देह में दुख उठाया था, इसलिए आप भी उसी मानसिकता के साथ खुद को तैयार करें।

जिस व्यक्ति ने शरीर में कष्ट सहा है, उसने पाप करना छोड़ दिया है ताकि वह अपने शरीर में बचे हुए समय में लोगों की लालसा के लिए नहीं बल्कि परमेश्वर की इच्छा के लिए जी सके। लेखक मसीह की कहानी के अंत को शिष्य की कहानी के अंत के साथ सम्मानजनक अंत के रूप में जोड़ सकता है, उदाहरण के लिए, 4.13 में, इस हद तक आनन्दित हो कि आप मसीह के कष्टों को साझा करते हैं, ताकि जब उसकी महिमा प्रकट हो, तो आप अत्यधिक प्रसन्न हो सकें। क्योंकि मसीह का नमूना इस उलटी दुनिया से शिष्यों को परमेश्वर की उपस्थिति में सम्मान के स्थान पर लाने के लिए परमेश्वर द्वारा निर्धारित मार्ग है, जो लोग मसीह के नाम के कारण अपमानित या शर्मिंदा होते हैं, वास्तव में, अंत में, विशेषाधिकार प्राप्त लोग, धन्य लोग हैं।

क्योंकि वही ईश्वर जिसने यीशु को मृतकों में से जीवित किया और उसे महिमा दी, अब धर्मांतरित लोगों को महिमा में बुला रहा है, जब वे थोड़े समय के लिए इसी तरह से पीड़ित होते हैं, अब, उदाहरण के लिए, मसीह की कहानी को एक टेम्पलेट के रूप में उपयोग करके यह स्थापित करने के लिए कि शर्म को सहना ही ईश्वर की दृष्टि में स्थायी सम्मान का मार्ग है, इसके बीच में भी, लेखक वास्तविक कठिनाइयों और विस्थापन की वास्तविक भावना को खारिज नहीं करता है जिसका सामना धर्मांतरित लोग संभावित रूप से करते हैं क्योंकि उनके पड़ोसी उन्हें शर्मिंदा कर रहे हैं, उन्हें अस्वीकार कर रहे हैं। वह जानता है कि वे अब ऐसे लोगों के रूप में रह रहे हैं जो अब अपने समुदायों में घर जैसा महसूस नहीं करते हैं, जो अब उनके नहीं हैं।

और इसलिए, वह उन्हें निवासी विदेशी और ऐसे लोग कह सकते हैं जो अब अपने गृह नगरों में भी विदेशी के रूप में रह रहे हैं या रह रहे हैं। इन शब्दों के साथ, वह विस्थापन की उनकी वास्तविक भावना को स्वीकार करते हैं, लेकिन वह इस बात पर भी जोर देते हैं कि वे केवल निवासी विदेशी नहीं हैं। वे चुने हुए निवासी विदेशी हैं।

वे ईश्वर के पूर्वज्ञान के अनुसार चुने गए निवासी विदेशी हैं, जैसा कि लेखक ने अपने आरंभिक संबोधन में कहा है। ईश्वर के बिखरे हुए लोगों के बीच प्रवासी समुदाय के निवासी विदेशी की यह पहचान, ईसाई धर्मांतरित लोगों को धर्मग्रंथों से एक पहचान योग्य ऐतिहासिक पहचान प्रदान करती है क्योंकि ईश्वर के लोगों ने ऐतिहासिक रूप से बिखराव का सामना किया था, सबसे पहले उत्तरी इज़राइल राज्य पर असीरियन विजय के साथ, लेकिन यहूदा के दक्षिणी राज्य पर बेबीलोन की विजय की प्रत्याशा और उसके परिणामस्वरूप भी। यह संबोधित करने वालों के लिए अपने स्वयं के अनुभव की व्याख्या करने के लिए एक और सामान्यीकरण लेंस प्रस्तुत करता है।

विस्थापित होने की हमारी भावना, अब हमारे गृहनगर में भी प्रवासी होने की भावना, उस पहचान का एक प्रकार का पुनरुत्पादन है जिसे परमेश्वर के ऐतिहासिक लोगों को सदियों पहले सहना पड़ा था। इसलिए, उनके मेजबान समाज के भीतर उनका विस्थापन उन लोगों के लिए उपयुक्त है जो परमेश्वर के चुने हुए लोगों, यहूदी और गैर-यहूदी के इस नए इस्राएल में एकत्र हुए हैं।

लेखक विश्वासियों को यह भी आश्चस्त करता है कि वे जो प्रतिरोध और नुकसान सह रहे थे, वह इस बात का संकेत नहीं था कि वे परमेश्वर के अनुग्रह से बाहर थे, बल्कि इसके ठीक विपरीत थे।

यह इस बात का सबूत है कि वे ठीक उसी दिशा में आगे बढ़ रहे थे जिस दिशा में ईश्वर उन्हें ले जा रहा था। प्राचीन दुनिया में, जैसा कि आज भी आधुनिक दुनिया में है, क्योंकि ईमानदारी से कहूँ तो, मेरे लिए यह अभी भी एक तरह की सहज प्रतिक्रिया है; अगर कुछ बुरा होता है, तो मैं सोचता हूँ, क्या मैंने कुछ गलत किया है? क्या यह किसी तरह से मेरे द्वारा किए गए किसी काम की सज़ा है? प्राचीन दुनिया में लोगों की सोच में यह बहुत गहराई से समाया हुआ था। अगर आपके साथ कुछ बुरा होता है, तो यह किसी ईश्वर की वजह से होता है, या यहूदी संस्कृति में, यह इसलिए होता है क्योंकि एक ईश्वर आपसे नाखुश है।

हालाँकि, 1 पतरस का लेखक श्रोताओं को आश्चस्त करता है कि यह उनके अनुभव की व्याख्या करने का मॉडल नहीं है; यह बिल्कुल विपरीत है। यह तथ्य कि आपके साथ बुरी चीजें हो रही हैं, इसका मतलब है कि आप बिल्कुल ईश्वर की इच्छा में हैं। फिर से, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, मसीह के उदाहरण के कारण जिसका आप अनुसरण करते हैं, जिसने दुख के माध्यम से महिमा में प्रवेश किया।

लेखक उनके बारे में ऐसे लिख सकता है कि वे ईश्वर की इच्छा के अनुसार पीड़ित हैं, जो प्राचीन दुनिया में एक बहुत ही विदेशी अवधारणा है। आम तौर पर, यह ईश्वर की इच्छा के कारण पीड़ित होना होता है जो आपको पसंद नहीं करता या जो आपसे नाखुश है, लेकिन अब मसीह के प्रतिमान के कारण ईश्वर की इच्छा के अनुरूप पीड़ित होना है, जिसके पदचिन्हों पर आप चल रहे हैं, ईश्वर की उपस्थिति में हमेशा के लिए महिमा में प्रवेश करने की आशा के साथ। इसके आधार पर, लेखक कहता है कि सही प्रतिक्रिया शर्मिंदगी से बचना नहीं है, अप्रिय अनुभवों से बचना नहीं है, बल्कि बस अपने जीवन को वफादार निर्माता को सौंपते रहना है क्योंकि आप उसकी दृष्टि में जो अच्छा है उसे करना जारी रखते हैं।

लेखक श्रोताओं को याद दिलाता है कि भले ही वे जिस जगह पर हैं, वह इस समय अप्रिय लग सकता है क्योंकि वे बहुत विस्थापित हैं, क्योंकि उन्होंने इस दुनिया में अपना घर खो दिया है, और अभी तक वास्तव में अपने शाश्वत घर में पूरी तरह से प्रवेश नहीं किया है ताकि वे ईश्वर के शाश्वत राज्य में अपनेपन की भावना का आनंद ले सकें, लेखक उन्हें याद दिलाता है कि भले ही यह अप्रिय हो, लेकिन उन्होंने बहुत अच्छे कारणों से अपने पुराने जीवन को पीछे छोड़ दिया। पत्र के आरंभ में, पतरस लिखता है कि यह स्वयं ईश्वर ही था जिसने उनके लिए व्यर्थ जीवन शैली से मुक्ति का प्रबंध किया, जिससे विमुख होना उनके वर्तमान दुख का कारण है, लेकिन उन्होंने बहुत अच्छे कारणों से उस व्यर्थ जीवन शैली को पीछे छोड़ दिया, और अब ईश्वर की इच्छा के अनुसार उनके दुख का अर्थ है कि वे उस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं जो ईश्वर उनके लिए चाहता है, भले ही उनके पड़ोसी उनके प्रति शत्रुतापूर्ण प्रतिक्रिया दे रहे हों, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने उनसे पहले यीशु के प्रति प्रतिक्रिया दी थी। निंदा और अपमान के बीच जो वे सहते हैं, फिर भी ईश्वर अपनी पवित्र आत्मा के माध्यम से धर्मातरित लोगों के साथ ईश्वर को जोड़ता है।

इसलिए, पतरस लिखता है, यदि आप मसीह के नाम के कारण अपमानित होते हैं, तो आप विशेषाधिकार प्राप्त हैं क्योंकि महिमा की आत्मा, जो कि परमेश्वर की आत्मा है, आप पर टिकी हुई है। उन्हें परमेश्वर से अलग करने से बहुत दूर, यह सुझाव देने से बहुत दूर कि वे परमेश्वर की नाराजगी झेल रहे हैं, मसीहियों द्वारा परीक्षणों को सहना परमेश्वर के साथ उनके घनिष्ठ संबंध की पुष्टि करता है, क्योंकि वे ठीक वही अनुभव करते हैं जो परमेश्वर के अपने पुत्र ने अनुभव किया था, और वे परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध का आनंद लेते हैं जो पवित्र आत्मा उनके परीक्षणों के बीच प्रदान करता है। विश्वासियों को इस प्रकार आश्चस्त किया जाता है कि शर्म, दर्द और हाशिए पर जाने के उनके अनुभव का मतलब परमेश्वर के अनुग्रह का नुकसान नहीं है, बल्कि इसके विपरीत, यह इस बात का प्रमाण है कि, जैसा कि लेखक कहते हैं, आप परमेश्वर के अनुग्रह में हैं।

यीशु के प्रति वफ़ादारी की कीमत और एक ईश्वर की आज्ञाकारिता की कीमत को स्वीकार करके, धर्मातरित व्यक्ति वास्तव में ईश्वर को उचित सम्मान दे रहा है, क्योंकि वह अपने पड़ोसियों की आँखों के सामने ईश्वर की मित्रता के मूल्य और ईश्वर के वादों के मूल्य की गवाही दे रहा है। लेखक अध्याय 4, श्लोक 16 में इन विषयों को सामने लाता है। इसलिए धर्मातरित व्यक्ति को प्रोत्साहित किया जाता है कि वह शर्म भी महसूस न करे, बाहर से आने वाले सामाजिक दबाव को अपने अंदर न ले, ताकि वह खुद के उस पहलू को अस्वीकार कर दे जिसे सिस्टम के नापसंद करने वाले सदस्य, बाहरी दुनिया, आपत्तिजनक पाते हैं।

चौथा, लेखक श्रोता के संघर्ष को एक अन्य व्याख्यात्मक पृष्ठभूमि, उनके जीवन पर आध्यात्मिक युद्ध के ब्रह्मांडीय ढांचे के विरुद्ध शर्मिदा होने के अनुभव के साथ सेट करता है। अपने पादरी पत्र के अंत में, लेखक लिखते हैं, शांत रहें, सावधान रहें, आपका दुश्मन, शैतान, एक दहाड़ते हुए शेर की तरह घूम रहा है, जो किसी को निगलने की तलाश में है। उसका विरोध करें, अपने भरोसे में दृढ़ रहें, यह जानते हुए कि दुनिया भर में आपकी बहनें और भाई समान प्रकार के दुखों का सामना कर रहे हैं।

इस अंश में, गैर-ईसाई पड़ोसी द्वारा ईसाइयों के पुनर्वास के प्रयासों को उनके ब्रह्मांडीय शत्रु द्वारा उन्हें ईश्वर के अच्छे लक्ष्य से अयोग्य ठहराने के प्रयासों के रूप में व्याख्यायित किया गया है। लेखक इस प्रकार उन्हें इन सामाजिक दबावों के प्रतिरोध को एक सम्मानजनक जीत के मार्ग के रूप में देखने के लिए पुनः स्थापित करता है। यह उनके ब्रह्मांडीय शत्रु, शैतान द्वारा उनके ईश्वर की ओर यात्रा में बाधा डालने के प्रयासों के प्रति प्रतिरोध है।

अब, हमने अपने पहले व्याख्यान में इस बारे में बात की है कि लोग चुनौती-पुनःपोस्ट प्रकार के सामाजिक संपर्क में अपने सम्मान की रक्षा कैसे करते हैं। हमने देखा कि कैसे यीशु ने अपने सम्मान की रक्षा की जब आराधनालय के अधिकारी ने सब्त के दिन चंगाई की औचित्य को चुनौती देकर इसे चुनौती दी। यदि किसी सम्माननीय व्यक्ति का अपमान किया जाता है या सम्मान के लिए कोई अन्य चुनौती दी जाती है, तो उस व्यक्ति को सांस्कृतिक रूप से प्रतिशोध लेने के लिए तैयार किया जाता है, एक ऐसा जवाब पेश करना जो चुनौती का मुकाबला करेगा और सार्वजनिक नज़र में सम्मान को बनाए रखेगा।

बेशक, यह तय करना दर्शकों पर निर्भर करता है कि चुनौती दिए गए व्यक्ति ने अपने सम्मान की सफलतापूर्वक रक्षा की है या नहीं। और इस तरह की प्रतियोगिताओं में, आमतौर पर एक पुरुष ही शामिल होता है। पीटर जैसे ईसाई नेताओं ने विशेष रूप से ईसाई प्रतिवाद विकसित करने की कोशिश की।

यीशु के अनुयायी अपने सम्मान के लिए चुनौतियों का सामना करेंगे, लेकिन अपमान या हिंसा की उसी मुद्रा का उपयोग करके नहीं जो बाहरी दुनिया उन पर फेंकती है। यीशु का उदाहरण एक बार फिर लेखक के चिंतन का प्रारंभिक बिंदु है। वह अध्याय 2, श्लोक 22 और उसके बाद लिखते हैं, जब यीशु को अपमानित किया गया, तो उसने उसी तरह से और अधिक अपमान नहीं किया, बल्कि इसके बजाय, उसने खुद को न्याय करने वाले, यानी ईश्वर के प्रति समर्पित कर दिया।

लेखक सभी ईसाइयों से मसीह के उदाहरण का अनुसरण करके अपने विरोधियों को जवाब देने के लिए कहता है, पद 3, 9 से उद्धृत करते हुए, चोट के बदले चोट न दें, अपमान के बदले अपमान न करें, बल्कि इसके विपरीत, आशीर्वाद दें, क्योंकि इसके लिए आपको बुलाया गया है ताकि आप आशीर्वाद प्राप्त कर सकें। लेखक यह आशा रखता है कि अंततः, अच्छा करने से, बुराई के सामने अच्छाई का जवाब देने से, ईसाई अपने पड़ोसियों पर विजय प्राप्त करेंगे और अपने पड़ोसियों द्वारा उन पर लगाए गए अपमान को पलट देंगे क्योंकि वे देखेंगे कि ईसाई वास्तव में उदार हृदय वाले, परोपकारी, सम्माननीय, क्षमाशील, सम्माननीय नागरिक हैं। इस प्रकार, लेखक को उम्मीद है कि इस तरह के जवाब से, बुराई के बदले अच्छाई का जवाब देकर, लेखक को उम्मीद है कि ईसाई, उद्धरण, मूर्ख लोगों की अज्ञानतापूर्ण बदनामी को चुप करा देंगे, जैसा कि हम 2:13 से 3:15 में पढ़ते हैं। शर्म की भावना के आगे झुकने या विरोध उत्पन्न करने वाले तरीके से पुनः पोस्ट करने के बजाय, ईसाइयों को 3.15 में अपनी नई प्रतिबद्धताओं और प्रथाओं, यीशु और एक ईश्वर के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए एक सौम्य लेकिन प्रतिबद्ध मौखिक बचाव, एक क्षमा याचना, एक बचाव भाषण देने के लिए तैयार रहने के लिए कहा गया है।

लेखक चाहता है कि वे जानें कि उन्होंने खुद ही अपने चुनाव क्यों किए हैं और इस प्रकार, वे हार क्यों नहीं मानने वाले हैं, उसी दिशा में आगे बढ़ते हुए जिस दिशा में उन्होंने अपने धर्म परिवर्तन के साथ शुरुआत की थी। और वे चाहते हैं कि लेखक चाहता है कि धर्म परिवर्तन करने वाले लोग इसे, इसके अलावा, ईसाई के रूप में अपनी आशा की गवाही देने के अवसर के रूप में उपयोग करें। लेखक यहाँ 3:15 से 16 में फिर से इस विश्वास पर लौटता है कि देर-सवेर, ईसाई समूह का सद्गुणी आचरण उनके पड़ोसियों को उनकी गवाही के लिए जीत लेगा और जो लोग अब ईसाइयों को शर्मिंदा करते हैं, वे खुद शर्मिंदा हो जाएँगे।

हमने उल्लेख किया कि अल्पसंख्यक समूहों और अल्पसंख्यक संस्कृतियों के नेताओं ने अपने समूह के सदस्यों को बाहरी लोगों की शर्मिंदगी या अस्वीकृति से बचाने के लिए बहुत ध्यान दिया, शर्मिंदगी और अस्वीकृति के अनुभव को उन तरीकों से फिर से व्याख्यायित किया जो अल्पसंख्यक समूह के लिए निरंतर धीरज और प्रतिबद्धता को सुविधाजनक बनाएगा। लेकिन हमने यह भी उल्लेख किया कि इन समूह के नेताओं ने आम तौर पर उस सम्मान की पुष्टि करना भी महत्वपूर्ण पाया जो उनके समूह के सदस्यों को वर्तमान में उन लोगों की नज़र में प्राप्त है

जिनकी राय वास्तव में मायने रखती है। और जैसा कि यहूदी अल्पसंख्यक संस्कृति के साथ हुआ, वैसे ही ईसाई अल्पसंख्यक संस्कृति के साथ भी, ईश्वर की दृष्टि में सम्मानित होना इस संबंध में एक प्रमुख विषय था।

ईसाई आंदोलन में शामिल होने से ईसाइयों को बाहरी लोगों की नज़र में शर्मिंदगी उठानी पड़ी, जो ईश्वर के बारे में अंधेरे में रहते हैं, लेकिन इसने उन्हें सबसे महत्वपूर्ण राय के न्यायालय, ईश्वर के न्यायालय और उन लोगों के न्यायालय में अधिक सम्मान भी दिलाया है जो ईश्वर के प्रकाश से प्रकाशित हुए हैं, अर्थात् साथी ईसाई। और इसलिए, लेखक, इस देहाती शब्द के माध्यम से, एक ईश्वर की राय पर ध्यान आकर्षित करता है: जो लोग वर्तमान में ईसाइयों पर शर्मिंदगी डालते हैं, वे एक दिन उस व्यक्ति को जवाब देंगे जो जीवित और मृत लोगों का न्याय करने के लिए तैयार है। ये धर्मांतरित लोग ईसाई समूह के बाहरी लोगों की तुलना में एक बेहद विशेषाधिकार प्राप्त स्थिति का आनंद लेते हैं जो खुले तौर पर एक ईश्वर की अवज्ञा करते हैं।

मसीहियों को अब जो परीक्षाएँ झेलनी पड़ रही हैं, वे कठिन हो सकती हैं, लेकिन मसीही समूह से बाहर के लोगों के लिए जो परीक्षाएँ होंगी, वे कहीं ज़्यादा कठिन होंगी और उनका नतीजा कहीं ज़्यादा भयानक होगा। लेखक श्रोताओं को आश्चस्त करता है कि उनके आगे सम्मान है। इन परीक्षाओं के ज़रिए प्रकट उनके विश्वास की सच्चाई फिर से बढ़ेगी, जैसा कि 1 पतरस 1.7 में कहा गया है, यीशु मसीह के प्रकट होने पर प्रशंसा, महिमा और सम्मान की वृद्धि होगी।

लेखक 1 पतरस 2:7 में परमेश्वर के एक आधिकारिक वचन का हवाला देते हैं, जो धर्मांतरित व्यक्ति के अंतिम औचित्य की निश्चितता के प्रमाण के रूप में है। यह वचन यशायाह 28 पद 16 से आता है, जो कोई उस पर विश्वास करता है, जो कोई उस पर भरोसा करता है, उसे लज्जित नहीं होना पड़ेगा। इससे, लेखक 1 पतरस 2:7 में निष्कर्ष निकालता है कि सम्मान तो तुम्हारे लिए है जो विश्वास करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे सम्मान उस व्यक्ति को मिला जिसे मनुष्यों ने अस्वीकार कर दिया था, लेकिन परमेश्वर के अनुमान में चुना हुआ और अनमोल था।

हालाँकि, सम्मान केवल धर्मांतरित लोगों के लिए एक भविष्य का वादा नहीं है। लेखक ने सुसमाचार को स्वीकार करने और उस वचन के प्रति उनकी आज्ञाकारिता के कारण अब उन्हें मिलने वाले सम्मान पर विस्तार से बात की है। वह 1:3 में परमेश्वर द्वारा उन्हें एक जीवित आशा के लिए नया जन्म देने के बारे में बात करता है। वे वचन के कारण एक अनंत जीवन के लिए पुनर्जन्म लेते हैं, न कि मृत्यु और क्षय के अधीन जीवन जीते रहने के लिए।

यह अध्याय 1, श्लोक 23 का निष्कर्ष है। इस नए जन्म की विरासत जो उन्हें दी गई है, 1:4 और 5 का हवाला देते हुए, एक विरासत है जो अविनाशी और निष्कलंक और अमिट है, जो आपके लिए स्वर्ग में रखी गई है, जिन्हें ईश्वर की शक्ति द्वारा भरोसे के माध्यम से एक उद्धार के लिए संरक्षित किया जा रहा है जो अंतिम समय में प्रकट होने के लिए तैयार है। लेखक उन्हें ईश्वर की दृष्टि में उनके मूल्य की याद दिलाता है, एक मूल्य जो ईश्वर द्वारा चुकाई गई कीमत में प्रदर्शित होता है, उद्धरण, एक बेदाग, बेदाग मेमने के रूप में मसीह का कीमती खून, शिष्यों को उनके पिछले जीवन से वापस खरीदने के लिए चुकाई गई कीमत, जिसमें उनके व्यर्थ तरीके शामिल हैं।

संयोगवश, यह छवि धर्मातरित लोगों को उनके पिछले जीवन से अलग करने के लिए बहुत शक्तिशाली है, वह जीवन जिसकी ओर उनके पड़ोसी उन्हें वापस खींचने की कोशिश कर रहे हैं, क्योंकि उस जीवन से बाहर आना यीशु की मृत्यु से कम कीमत पर नहीं खरीदा गया था, मृत्यु, मानो, एक बेदाग निष्कलंक मेमने के रूप में मसीह की मृत्यु। अपने पड़ोसी की शर्मनाक चालों के आगे झुकना मसीह की मृत्यु द्वारा उनके लिए किए गए सभी अच्छे कामों को खत्म करने के बराबर होगा। जब ये धर्मातरित लोग यीशु के चारों ओर जीवित पत्थरों की तरह इकट्ठा होते हैं, तो वे चुनाव के सम्मान में, एक कीमती आधारशिला साझा करते हैं, क्योंकि वे मसीह के चारों ओर एक आध्यात्मिक घर में फिट होते रहते हैं।

पतरस उन्हें पवित्र याजकवर्ग का नाम देकर उच्च सम्मान प्रदान करता है, जो विशेष सेवा और सर्वशक्तिमान परमेश्वर तक पहुँच के लिए अलग रखा गया समूह है। बाद में उसी अध्याय में, अध्याय 2, श्लोक 9 में, लेखक श्रोताओं को सम्मानसूचक उपाधियों की झड़ी लगाता है। आप एक चुनी हुई जाति, एक शाही याजकवर्ग, एक पवित्र राष्ट्र, परमेश्वर की विशेष संपत्ति के लोग हैं।

वे एक शर्मनाक जगह, गैर-ईसाइयों के स्थान से निकलकर, कुलीनता के एक नए क्षेत्र में पहुँच गए हैं, जो ईश्वर और एक-दूसरे के साथ उनके रिश्ते में निहित आत्म-सम्मान और नैतिक साहस का आधार है। वैसे, यह सारा सम्मान दांव पर है अगर वे अपने पड़ोसियों के सामाजिक दबाव के आगे झुक जाते हैं। अगर वे अपने पड़ोसियों, गैर-ईसाइयों द्वारा पुनर्वास किए जाने को स्वीकार करते हैं, तो वे वह सारा सम्मान खो देते हैं जो लेखक ने पुष्टि की है कि उन्होंने मसीह में प्राप्त किया है।

लेखक 2:10 में आगे कहता है, वे एक शर्मनाक जगह से चले गए हैं, एक ऐसी जगह जिसे लेखक अंधकार के रूप में वर्णित कर सकता है, एक ऐसी पहचान जिसमें कोई भी व्यक्ति नहीं है, एक व्यर्थ जीवन शैली, एक ऐसा जीवन जो लोगों की अज्ञानता में मनोरंजन करने वाली इच्छाओं के अनुरूप है, एक ऐसा जीवन जो अपने पड़ोसियों के साथ अपव्यय की बाढ़ में भागता है। और वे वहाँ से महान सम्मान के स्थान पर, परमेश्वर के अद्भुत प्रकाश में चले गए हैं, जिसमें संभवतः एक परमेश्वर के सामने इस दुनिया में जीवन के वास्तविक मापदंडों के बारे में प्रबुद्ध होने की भावना भी शामिल है। वे बिना किसी पहचान से परमेश्वर के अपने लोगों के रूप में पहचाने जाने के लिए चले गए हैं, परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी प्रतिक्रिया के माध्यम से शुद्धिकरण का जीवन और एक व्यक्ति के गुण को दागदार करने वाली शारीरिक वासनाओं से दूर रहना।

और अपने पड़ोसियों के साथ व्यभिचार की बाढ़ में भागने के बजाय, अब वे मानवीय लालसाओं के बजाय ईश्वर की इच्छा के पीछे भागते हैं। इस प्रकार लेखक ने ईसाइयों के रूप में उनके जीवन की एक तस्वीर खींची है जो उनके द्वारा पीछे छोड़े गए जीवन की तुलना में बहुत अधिक सम्मानजनक जीवन है। इसलिए, उम्मीद है कि यह इन धर्मातरित लोगों को प्रेरित करेगा कि वे अपने पड़ोसियों के दबाव में आकर उस पुराने, कम सम्मानजनक जीवन शैली में वापस न जाएं।

हमने कहा है कि सम्मान एक सामाजिक मूल्य है। इसे बनाए रखना दूसरे लोगों पर निर्भर करता है। मैं अपने हिसाब से सम्मान की परिभाषाओं पर तभी तक कायम रह सकता हूँ जब तक कि मैं खुद ही इसे अलग-अलग तरह से परिभाषित न करूँ।

मुझे इन मूल्यों को मुझ तक वापस लाने और मुझे इस हद तक पुष्टि करने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण लोगों के एक समूह की आवश्यकता है कि मैं इन मूल्यों को अपनाऊं। और इस प्रकार, प्रथम पतरस इस सामाजिक मैट्रिक्स को सुदृढ़ करने पर भी उचित मात्रा में ध्यान देता है जो दृढ़ता को सक्षम बनाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि ईसाई समुदाय को स्वयं ही सामाजिक समर्थन और व्यक्तिगत पुष्टि प्रदान करनी चाहिए ताकि व्यक्तियों को उनके पुराने जीवन के तरीके और उनके समर्थन के पुराने नेटवर्क में वापस जाने से रोका जा सके।

इस प्रकार, लेखक इस भावना से शुरू से अंत तक श्रोताओं से आग्रह करता है कि वे एक-दूसरे के प्रति सच्चा भाईचारा और बहन जैसा प्रेम दिखाएं, जो दिल से निरंतर हो, 3.8 में सामंजस्य और एकता की तलाश करें, 4:8 से 11 में निस्वार्थ आपसी समर्थन और आतिथ्य प्रदर्शित करें, और अध्याय 5 पद 3 और 6 में एकजुटता और सद्भाव का पोषण करने वाली उस कोमल विनम्रता के साथ एक-दूसरे के प्रति खुद को पेश आए। यह आवश्यक है कि समूह के भीतर संबंधात्मक बंधन बाहरी लोगों के पास मौजूद संबंधात्मक पूंजी की तुलना में अधिक मूल्यवान, अधिक शक्तिशाली और अधिक महत्वपूर्ण बनें। विश्वासियों के सम्मान की पुष्टि के संबंध में ईसाई पतियों और पत्नियों के रिश्तों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। पतियों से बात करते हुए, लेखक लिखता है, अपने पतियों से बात करते हुए, अपने पत्नियों को कमजोर लिंग के रूप में सम्मान दें

यह वास्तव में एक ऐसा पाठ है जिसे अक्सर अनुवाद में काट दिया जाता है। प्रेरणाओं और कार्यों की जोड़ी धुंधली हो जाती है, लेकिन मैंने यहाँ इस तरह से प्रस्तुत किया है जो ग्रीक वाक्यांश के बहुत करीब से समानांतर है। लेखक का कहना है कि किसी को अपनी पत्नी को इस आधार पर विचार करना चाहिए कि वह शारीरिक रूप से कमजोर है, जो अक्सर होता है, हमेशा ऐसा नहीं होता है, लेकिन निश्चित रूप से, प्राचीन दुनिया में, यह अक्सर मामला होता है।

लेकिन साथ ही, ईसाई पत्नी को आपके साथ संयुक्त वारिस होने के आधार पर सम्मान देना भी ज़रूरी है। कहने का मतलब यह है कि यह विचार प्राचीन रूढ़िवादिता के साथ मेल खाता है कि महिला जोड़े के ज़्यादा कमजोर सदस्य के रूप में है। लेकिन सम्मान देने की आज्ञा ईसाई पत्नी की महिमा के सह-वारिस के रूप में विशिष्ट ईसाई पहचान के साथ मेल खाती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि एक घर में बहनों और भाइयों के बीच के रिश्ते में, जो कि रिकॉर्ड के अनुसार एक बहुत अधिक समान रिश्ता है, प्राचीन दुनिया में पति और पत्नी जैसे पदानुक्रमिक नियम की तुलना में। अब, 1 पतरस में सम्मान और शर्म की भाषा और 1 पतरस के श्रोताओं, 1 पतरस के अभिभाषकों द्वारा सामना की गई गतिशीलता और पतरस द्वारा स्थिति की चुनौतियों का सामना करने में उनकी मदद करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली बयानबाजी की रणनीति के बारे में हमारे विचार आज के ईसाइयों के लिए निश्चित निहितार्थ हैं। मैं सभी संभावनाओं पर विस्तार से नहीं बोलूंगा, बल्कि हमें एक पर विचार करने के लिए प्रेरित करूंगा जो मुझे लगता है कि वैश्विक चर्च के मामले पर विचार करते समय काफी दबावपूर्ण लगता है।

समीक्षा के तौर पर, मैं यह कहना चाहता हूँ कि 1 पतरस के लेखक ने अपने श्रोताओं को यह सशक्त बनाने का प्रयास किया है कि वे अपने जीवन के लिए जो नई दिशा चुनी है, उसे बनाए

रखें, जबकि वे बाहरी दबावों का सामना कर रहे हैं, जिसका उद्देश्य उनकी प्रतिबद्धता को कम करना और उन्हें उन अंतर्दृष्टियों को धोखा देना है जो उनके पास थीं और जिनके कारण उनका धर्म परिवर्तन हुआ। लेखक उन्हें प्रतीकात्मक और सामाजिक संसाधनों को परिभाषित करने में मदद करता है, जिनकी उन्हें अपने पड़ोसी के विपरीत दबाव का सामना करते हुए अपने स्वयं के नैतिक विकल्पों को बनाए रखने के लिए आवश्यकता होती है। 1 पतरस में पाए जाने वाले वचन और रणनीतियों को मूर्त रूप देना सबसे विश्वसनीय रूप से वहीं से शुरू होगा जहाँ हम विश्वास के समुदाय का सामना करने वाली समान सामाजिक गतिशीलता पाते हैं।

ईश्वर के वैश्विक परिवार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा कई गैर-पश्चिमी देशों में है, उदाहरण के लिए, भारत, चीन, इंडोनेशिया, नाइजीरिया, कई इस्लामी देश और पूर्व समय में, सोवियत संघ। इन देशों में ईसाइयों को निंदा, भेदभाव, विशेषाधिकार और जीविका के साधनों की हानि, यहाँ तक कि कारावास और मृत्यु का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि उन क्षेत्रों में प्रमुख और बहुसंख्यक संस्कृतियाँ ईसाइयों को सही करने के लिए अपने पास मौजूद सभी विचलन नियंत्रण तकनीकों का उपयोग करना जारी रखती हैं। 1 पतरस प्रतिबंधित और शत्रुतापूर्ण वातावरण में ईसाइयों का समर्थन करने के तरीकों का सुझाव देता है।

यह विशेष रूप से उपयोगी है क्योंकि उनमें से कई वातावरण स्वयं सम्मान और शर्म की संस्कृतियाँ हैं। इसलिए, 1 पतरस का उनके लिए संबोधन सांस्कृतिक रूप से बहुत सीधा है। लेकिन अगर हम उन वातावरणों से बाहर रहते हुए यह देख रहे हैं तो हम क्या कर सकते हैं? 1 पतरस सुझाव देता है कि हम खुद को सताए गए लोगों के संपर्क में रख सकते हैं, अपनी बहनों और भाइयों को उनके महान संघर्ष में प्रोत्साहित कर सकते हैं।

पाठ दृढ़ता के लिए चर्च की वास्तविकता को एक सामाजिक मैट्रिक्स के रूप में बनाने का सुझाव देता है, ताकि इसे और अधिक तीव्रता से महसूस किया जा सके, अर्थात्, हमारे ईसाई बहनों और भाइयों के लिए अधिक प्रत्यक्ष और अधिक प्रचुर सामाजिक समर्थन प्रदान करना, जो चर्च के बाहर से महत्वपूर्ण सामाजिक दबाव का सामना कर रहे हैं। हम इसे प्रार्थना और भौतिक सहायता के माध्यम से अधिक तीव्रता से महसूस कर सकते हैं, खासकर जब किसी परिवार के मुख्य समर्थक को जेल में डाल दिया जाता है या हटा दिया जाता है, जब आर्थिक प्रतिबंधों का उपयोग जबरदस्ती के साधन के रूप में किया जा रहा हो, और धार्मिक उत्पीड़न के अंत के लिए कूटनीति के माध्यम से काम करना। हम अपनी बहनों और भाइयों के संपर्क में रह सकते हैं और ऐसे प्रश्न पूछ सकते हैं जो उन्हें सक्षम करेंगे, जो उन्हें उस पुराने जीवन शैली और उसके संबंधों से बाहर निकलने के अपने स्वयं के कारणों को स्पष्ट करने और याद करने का अवसर देगा, ताकि वे अपने पड़ोसियों या अपनी सरकार के धौंस के सामने अपनी पूर्व पसंद के प्रति अपनी निरंतर प्रतिबद्धता का समर्थन कर सकें।

और 1 पतरस सुझाव देता है कि हमारे लिए यह मूल्यवान हो सकता है कि हम एक ऐसी आवाज़ बनें जो उन्हें बताए कि दुनिया भर में उनकी बहनें और भाई उन्हें कितना महत्व देते हैं, हम उनके विश्वास के मूल्य के कारण जो कुछ भी वे झेलने को तैयार हैं, उसका कितना सम्मान करते हैं, और उनकी गरिमा की पुष्टि करने के लिए अन्य तरीकों की तलाश करते हैं। इस तरह, हम 1 पतरस के लेखक की तरह कार्य कर सकते हैं और उम्मीद कर सकते हैं कि अन्य ईसाई एक

दूसरे के प्रति कार्य करेंगे। हम ऐसे तरीकों से कार्य कर सकते हैं जो हमारे ईसाई बहनों और भाइयों के सम्मान की पुष्टि उनके पड़ोसियों की तुलना में अधिक जोर से और अधिक सार्थक तरीके से करेंगे।

यह डॉ. डेविड डिसिल्वा द्वारा नए नियम की सांस्कृतिक दुनिया पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 2, रीडिंग 1 पीटर अट्यून्ड टू ऑनर एंड शेम है।